• धर्म और संस्कृति में अन्तर :

1. धर्म को संस्कृत का एक असमुच्य माना जाता है, जबकि धर्म को संस्कृति से बड़ा चित्र माना जाता है।

2. संस्कृति को लोगों के साथ रहने के वर्षों से प्राप्त ज्ञान का एक समूह माना जाता है। दूसरी ओर, धर्म किसी चीज के प्रति एक विश्वास प्रणाली है जो किसी की संस्कृति को स्वीकार कर भी सकता है और नहीं भी।

3. धर्म का सम्बन्ध उस सर्वशक्तिमान या निर्माता से है जिसने दुनिया बनाई है। दूसरी ओर, संस्कृति का सम्बन्ध मनुष्य से है जो उसकी सामाजिक विरासत है।

4. संस्कृति समय बीतने के साथ बदल सकती है, परन्तु धर्म में मूल शर्तें पहले से तय है।

5. धर्म का अस्तित्व ईश्वर की ओर से पवित्र शास्त्र में लिखा गया है। दूसरी ओर संस्कृति विश्वासों, मूल्यों, रीति-रीवाजों व्यवहारों और कलाकृतियों से सुशोभित करती है।

6. संस्कृति विश्वास के जीवन के तरीके को परिभाषित कर सकती है। संस्कृति एक व्यक्ति के दृष्टिकोण, विश्वास और सामाज में रिती-रिवाजों के लिए एक शब्द है। जबकि धर्म का सम्बन्ध एक इश्वर या निर्माता से है, जिसने दुनिया बनाई है। धर्म का कोई खास लिखित रूप है जो संस्कृति का नहीं है।

परन्तु धर्म कहीं-कहीं वातावरण पर भी निर्भर करती है। और धर्म के अनुसार ही वहाँ की संस्कृति भी चलती रहती है।

भारतीय संस्कृत में संगम साहित्य के अनुसार धर्म : संगम और संगम के बाद की अवधि के कई कार्य, जिनमें से कई हिन्दु या जैन मूल के हैं। इनमें से अधिकांश ग्रन्थ असम पर आधारित हैं, जो धर्म के लिए तामिल शब्द है। तिरुक्कुरल या कुरल का प्राचीन तामिल नैतिक पाठ, सम्भवत: जैन या हिन्दु मूल का एक पाठ धर्म, अर्थ और काम पूरी तरह से और विशेष रूप से असम पर आधारित है। नलदियार, संगम के काल के बाद के काल का एक जैन पाठ, असम या धर्म पर जोर देने में कुरल के सामान पैटर्न का पालन करता है।